ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 24 कुल पृष्ठ-8 4 से 10 मार्च, 2021 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 फा. कृ.-06

आर्य समाज, बेटी बचाओ अभियान एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक में 14वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का हुआ भव्य शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति को सबल बनने तथा आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया – स्वामी आर्यवेश

सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संकल्प के साथ अर्पित की गई आहुतियाँ

आर्य समाज, बेटी बचाओ अभियान एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 2 मार्च, 2021 से 14 मार्च, 2021 तक निरन्तर चलने वाला बेटी बचाओ महायज्ञ स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली (आश्रम) रोहतक, हरियाणा में समारोह पूर्वक प्रारंभ हुआ। महायज्ञ में कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, नशाखोरी, अश्लीलता तथा धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध संकल्प की आहुतियाँ डलवाई गई। यज्ञ के ब्रह्मा पद को प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा संन्यास आश्रम गाजियाबाद के अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश जी ने सुशोभित किया। इस अवसर पर स्वामी चंद्रवेश जी ने कहा कि आर्य समाज का बेटियों को बचाने का आंदोलन भी एक महायज्ञ है। क्योंकि उपकार का दूसरा नाम भी यज्ञ है। जिस कार्य के करने से प्राणी मात्र का लाभ होता हो वह कार्य यज्ञ कहलाता है। उन्होंने कहा कि यदि हम वेद मार्ग पर चलते हैं तो एक सुंदर व प्रेरणादायी समाज का निर्माण कर सकते हैं। महायज्ञ की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षित संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती हैं। ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले महिला अधिकारों की वकालत की थी। महर्षि दयानन्द जी ने नारी जाति के लिए पढ़ने लिखने और जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का जो अवसर प्रदान किया उसी का यह परिणाम है कि आज महिलाएँ समाज में बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रही हैं। यह सब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों की विजय है। लेकिन अभी भी कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति अनाचार, अत्याचार, उत्पीड़न आदि की समस्या बरकरार है। आर्य समाज बहनों के मान–सम्मान व स्वाभिमान की लड़ाई लड़ रहा है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि मां बच्चे का पहला गुरु होती है। यदि गुरु ही संस्कारित नहीं होंगे तो बच्चों में संस्कार कैसे पैदा होंगे। कन्या को संस्कारित करने से उनमें अच्छे गुणों के अतिरिक्त आत्म बल पैदा होता है, जिसके कारण उन्हें जीवन पथ पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। इसलिए समाज व सरकार को नारी को शिक्षा एवं संस्कार देने पर ताकत लगानी चाहिए। उन्होंने जीवन में संस्कार, चरित्र, ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। बेटी बचाओ अभियान की संयोजक प्रवेश आर्या ने बताया कि यह यज्ञ स्वामी इंद्रवेश जी के 84वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। 14 मार्च तक चलने वाले इस यज्ञ में चारों वेदों के 20,000 से ज्यादा मंत्रों के माध्यम से आहुतियाँ दी जाएगी। इस यज्ञ में वेद पाठ संन्यास आश्रम गाजियाबाद के ब्रह्मचारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ अभियान को समर्पित चारों वेदो का यह 14वां यज्ञ है। 14 मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति व वार्षिक समारोह का आयोजन किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में मुख्य यज्ञमान नवदम्पति अमित आर्य कुंडू व उनकी धर्मपत्नी रही। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, अजय आर्य, प्रीति आर्या, विनोद हुड्डा, कर्नल आर.के.सिंह, बलवान सिंह, जिले सिंह आर्य, कृष्ण प्रजापत, पूनम आर्या, रीमा आर्या, किरण आर्या, एकता आर्या, पूजा आर्या, मीनू आर्या, सूरजमल पहलवान, टेकराम, श्रवण कुमार, सोनू आर्य, धर्मेन्द्र आर्य आदि भी उपस्थित रहे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शिवरात्रि का सन्देश

- ले. स्व. श्री आचार्य रामदेव जी

देश के अन्दर जो लहरें चल रही हैं उनका आर्य समाज के प्रचार पर भी असर पड़ रहा है। उचित तो यह था कि आर्य समाज का प्रभाव ही देश की प्रत्येक लहर के अन्दर दिखाई देता परन्तु दुःख इस बात का है कि उल्टा आर्य समाज पर इनका असर हो रहा है। हिन्दू संगठन की लहर चली और आर्य समाज इसमें बह गया। इतना तो हम समझते हैं कि आर्य जाति की रक्षा करना आर्य समाज का कर्त्तव्य है परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि हिन्दू संगठन के नाम पर आर्य समाज अपने सिद्धान्तों की भी बलि दे दे। जब से हिन्दू संगठन की लहर चली है तब से आर्य समाज के अन्दर मूर्ति पूजा के खंडन करने का भाव ढीला हो गया है। कई अन्य आर्य समाजी भाई यह समझते हैं कि यदि मूर्ति पूजा का खंडन किया जायेगा तो हिन्दू भाई अप्रसन्न हो जायेंगे। इसलिए हिन्दुओं को खुश करने के लिए हमारे भाई कई ऐसे कार्य कर बैठते हैं जो कि आर्य समाज की स्पिरिट के विरूद्ध हैं।

शिवरात्रि के दिन मूलशंकर को सत्य ज्ञान का बोध हुआ था। इसीलिए इस दिवस को बोधोत्सव के नाम से मनाया जाता है। इसी दिन ऋषि को इस बात का ज्ञान हुआ था कि निराकार परमात्मा की मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। आर्य जाति परमात्मा के सत्यस्वरूप को भूलकर पत्थरों को परमात्मा मानने लग गई थी और पत्थर के अन्दर ही परमात्मा के सम्पूर्ण गुणों का आभास देखने लग गई थी। ऋषि ने इसी शिवरात्रि के दिन सच्चे शिव की प्राप्ति का दृढ़ संकल्प कर लिया था और 14 वर्ष तक नर्मदा की तलैहटी से गंगास्त्रोत तक भ्रमण करते हुए ब्रह्मचर्य और तप से अपने जीवन को परिमार्जित करके, सैकड़ो प्रकार की विपदबाधाओं को झेलकर सच्चे परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया था। स्वामी दयानन्द के व्याख्यानों तथा ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट पता लगता है कि उनका भाव कितना कट्टर था। उन्होंने एक मिनट के लिए भी मूर्ति पूजकों से सुलह नहीं की। उनके जीवन का बहुत सा भाग ईश्वर पूजा के सिद्धान्त के प्रचार तथा मूर्ति पूजा के खंडन में व्यतीत हुआ। उनके विचार में आर्य जाति की गिरावट का मुख्य कारण मूर्तिपूजा था। ऋषि का धर्म वेदों की दृढ़ चट्टान पर अवलम्बित था और वह एक परमात्म पूजा का धर्म था। कई प्रकार के प्रलोभनों तथा आपत्तियों के आने पर भी स्वामी दयानन्द अपने सिद्धान्त से विचलित नहीं हुए। इस्लाम भी मूर्ति पूजा का कट्टर विरोधी समझा जाता है। इसके प्रवर्त्तक हजरत मुहम्मद ने अरब के जाहिल लोगों के सामने एक परमात्मा की पूजा (तौहीद) का सिद्धान्त रखा और मूर्ति पूजा का खंडन किया। परन्तु जिस समय कुरैश लोग सर्वथा मूर्ति पूजा छोड़ने के लिए बाधित हुए तो उन्होंने मुहम्मद साहब से प्रार्थना की कि उन्हें तीन दिवस का अवकाश दिया जावे और तीन दिन तक उन्हें मूर्तियों की पूजा करने की आज्ञा दे दी जाये। मुहम्मद साहब ने उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उन्हें तीन दिन तक मूर्ति की पूजा करने की आज्ञा दे दी। मुहम्मद को मूर्ति पूजा का कट्टर विरोधी समझा जाता है और कहा जाता है कि संसार में तौहीद का स्पष्ट शब्दों में प्रचार पहले पहले इन्होंने किया। परन्तु हम देखते हैं कि मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी मुहम्मद ने मूर्ति पूजकों से मूर्ति पूजा के विषय में सुलह की।

परन्तु स्वामी दयानन्द ने इस विषय में किसी से एक मिनट के लिए भी सुलह नहीं की। उदयपुर महाराज स्वामी जी के शिष्य थे। महाराज की स्वामी जी में अनन्य भक्ति और श्रद्धा थी। इन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु बनाया था। एक बार की घटना है कि इन्होंने स्वामी जी से प्रार्थना की कि वे उदयपुर के राज मन्दिर की गद्दी के मालिक बन जावें और सारी आय से अपने धर्म प्रचार का कार्य करें परन्तु केवल मूर्ति पूजा का खंडन न करें। इस पर स्वामी जी महाराज से बहुत असन्तुष्ट हुए और उन्होंने उसको खूब डांटा। इस प्रकार की अन्य भी कई घटनाएं स्वामी जी के जीवन में उपलब्ध होती हैं जिनके अध्ययन से पता चलता है कि कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने के समय से लेकर मृत्युपर्यन्त स्वामी जी ने एक मिनट के लिए भी मूर्ति पूजा के साथ सुलहनामा नहीं किया। स्वामी जी के जीवन का यह एक मुख्य भाग था। शिवरात्रि या बोधोत्सव का यही संदेश है। परन्तु हमें दुःख से कहना पड़ता है कि आर्य समाज इस समय अपने उद्देश्य से विचलित हो रहा है। देश के अन्दर जो लहरें चल रही हैं उनका आर्य समाज के प्रचार पर भी असर पड़ रहा है। उचित तो यह था कि आर्य समाज का प्रभाव ही देश की प्रत्येक लहर के अन्दर दिखाई देता परन्तु दुःख इस बात का है कि उल्टा आर्य समाज पर इनका असर हो रहा है। हिन्दू संगठन की लहर चली और आर्य समाज इसमें बह गया। इतना तो हम समझते हैं कि आर्य जाति की रक्षा करना आर्य समाज का कर्त्तव्य है परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि हिन्दू संगठन के नाम पर आर्य समाज अपने सिद्धान्तों की भी बलि दे दे। जब से हिन्दू संगठन की लहर चली है तब से आर्य समाज के अन्दर मूर्ति पूजा के खंडन करने का भाव ढीला हो गया है। कई अन्य आर्य समाजी भाई यह समझते हैं कि यदि मूर्ति पूजा का खंडन किया जायेगा तो हिन्दू भाई अप्रसन्न हो जायेंगे। इसलिए हिन्दुओं को खुश करने के लिए हमारे भाई कई ऐसे कार्य कर बैठते हैं जो कि आर्य समाज की स्पिरिट के विरूद्ध हैं। हमने कई उपदेशकों को यह कहते सुना है कि ''हिन्दुओं के 33 करोड़ देवी-देवता हैं फिर भी वे मुसलमानों की कबरों की पूजा करते हैं।'' जहां मूर्ति पूजा का सर्वथा खंडन करना चाहिए वहां हिन्दुओं को अपने देवी देवताओं की पूजा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। वे भाई भूल जाते हैं कि जो व्यक्ति मूर्ति पूजा करता है उसका यह स्वभाव पड़ जाता है कि वह संसार भर की मूर्तियों की पूजा करे। यही कारण है कि बहुत से कब्र-परस्त मुसलमान भी हिन्दू ज्योतिषियों के पास आकर तावीज इत्यादि बन्धवाते हैं। इसलिए हमारा कर्त्तव्य तो यह है कि हम सर्वथा मूर्ति पूजा का खंडन करें न कि इसके साथ सुलह करें। हमें यह भी शोक से कहना पड़ता है कि हमारे कई नेता हिन्दुओं की मूर्ति स्थापना इत्यादि क्रियाओं में जाकर हिस्सा लेते हैं। ऐसी बातों में शरीक होना भी स्वामी जी की स्पिरिट और वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल आचरण है। हम यह देख रहे हैं कि आर्य समाजी अपने सिद्धान्तों से गिर रहे हैं और हिन्दू संगठन की लहर में पड़कर हम अपने सिद्धान्तों को कुर्बान कर रहे हैं। यदि सच्चे अर्थों में ऋषि बोध का दिन मनाना है तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम किसी भी अवस्था में मूर्ति पूजा के साथ सुलह न करें और संसार से मूर्ति पूजा का सर्वथा अत्यन्ताभाव करके ऋषि के मिशन को पूरा करें। (माघ संवत 1982 के आर्य से उद्धृत)

सरवाइकल ओरिजिनेटिंग वर्टिगो, यानि गर्दन में दिक्कत की वजह से चक्कर आना

– डॉ. सचिन गोयल

सरवाइकल ओरिजिनेटिंग वार्टिगो, यानि गर्दन में दिक्कत की वजह से चक्कर आना, आजकल एक आम समस्या बन चुकी है। कुछ लोग इस समस्या से भली–भांति परिचित होते हैं, क्योंकि उन्होंने या फिर उनके किसी सम्बन्धीजन ने इस समस्या को अनुभव किया होता है। पर आज हम इसकी विस्तार से चर्चा करते हैं और इसके विभिन्न पहलुओं पर नजर डालते हैं।

dkj.k % सरवाइकल, यानि अगर हम गर्दन की संरचना के बारे में बात करें तो गर्दन सात हड्डियों से मिलकर बनी होती है। इन्हीं हड्डियों के छिद्रों में दिमाग तक खून ले जाने वाली नसें मौजूद होती हैं। जब कभी इन नसों पर किसी तरह का दबाव पड़ता है तो उसके कारण दिमाग में हुई क्षण भर की देरी का असर चक्करों का रूप ले लेता है। इस दबाव पड़ने का कारण हड्डियों का अनियमित रूप से बढ़ना, माँसपेशियों की ऐंठन या फिर नसों का कमजोर पड़ जाना है। सामान्यतः यह स्थिति उन लोगों में ज्यादा होती है, जो एक ही स्थिति में अपनी गर्दन को ज्यादा लंबे समय तक रखते हैं, जैसे कि कम्प्यूटर पर काम करने वाले लोग या फिर उन लोगों में, जिनका व्यवसाय गर्दन को ज्यादा हिलाने–डुलाने से सम्बन्धित होता है। यह स्थिति अगर किसी को पहले गर्दन में चोट लगी हो तो भी हो सकती है।

y{k.k % वैसे तो इस तरह के चक्कर सामान्य गर्दन की समस्याओं के साथ पाए जाते हैं पर किसी–किसी स्थिति में इनका पता लगा पाना कठिन होता है।

lkekU; r% & चक्कर गर्दन के अलावा निम्न समस्याओं की वजह से भी आ सकते हैं जैसे –

1. कान के अन्दर वेस्टीब्यूलर सिस्टम, यानि बैलेंस कंट्रोल करने वाले तंत्र में किसी समस्या का आना।
2. अचानक से ब्लड प्रेशर का कम हो जाना।

3. पूरे शरीर की कमजोरी इसमें शरीर में मौजूद कुछ आवश्यक खनिजों जैसे सोडियम और पोटैशियम की मात्रा का कम हो जाना, या फिर एनीमिया और या फिर मियादी बुखार के बाद।

अगर ये चक्कर गर्दन की समस्या की वजह से हैं तो गर्दन में दर्द, मांसपेशियों में ऐंठन एवं सूजन, कंधे या कंधे से नीचे दर्द का आना, ऐसे लक्षण आम हैं। कई बार ये चक्कर सिर में दर्द, आंखों में भारीपन के साथ भी सम्बन्धित हो सकते हैं।

irk dSls yxk,a % अगर किसी को चक्करों की समस्या है तो इसका पता लगाना बहुत जरूरी है कि इसके पीछे कारण गर्दन ही है या फिर कुछ और। इन चक्करों को महसूस करने वाला ज्यादातर चक्कर बिस्तर पर लेटते समय या फिर बिस्तर से उठते समय महसूस करता है। अगर यह समस्या बढ़ चुकी है तो कई बार रास्ते में चलते–चलते भी उन्हें महसूस किया जा सकता है। सामान्यतः इन चक्करों का कारण एक डॉक्टर द्वारा कुछ टेस्ट के माध्यम से किया जा सकता है, पर फिर भी उन्हें 100 प्रतिशत सही साबित करना मुश्किल होता है।

bykt % इन चक्करों का इलाज किसी फिजिशियन या फिर फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा किया जा सकता है। पहले चक्करों के कारणों का पता लगाया जाता है, उसी के बाद ही उनका उसी अनुसार इलाज किया जाता है। अगर चक्कर गर्दन के कारण उत्पन्न हुई समस्या से है तो एक फिजियोथेरेपिस्ट सम्बन्धित गर्दन की समस्याओं का इलाज करता है, जैसे गर्दन की मांसपेशियों की ऐंठन को खत्म करना, उसकी सूजन को खत्म करना एवं नसों के विकारों को खत्म करना। इसके अलावा कुछ खास दवाओं के जरिए भी इन्हें कम किया जा सकता है।

D;k djsa o D;k u djsa % अगर आप इस समस्या से ग्रसित हैं तो तुरन्त अपने फिजिशियन या फिजियोथेरेपिस्ट से इसके कारणों का पता लगवाएं। जब चक्कर ज्यादा हों तो गर्म पानी से गर्दन में सिकाई करें। मांसपेशियों को आराम दे एवं किसी भी प्रकार का कोई व्यायाम न करें। सोते समय अपने लिए एक आरामदेह सोने की स्थिति का चयन करें, जिसमें आपको कम से कम चक्कर आते हों एवं तकिये का प्रयोग अवश्य करें। अगर आपको चलते वक्त चक्कर ज्यादा आते हों तो आप किसी फिजियोथेरेपिस्ट की सलाह से सरवाइकल कॉलर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व | 84वें जन्मदिवस पर विशेष | कीर्तिर्यस्य स जीवति

आर्य राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा स्वामी इन्द्रवेश जी

- स्वामी आर्यवेश

जन्म–१३ मार्च, १९३७
जन्मस्थान–ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता– श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :–

सन् १९६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १९६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १९६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १९६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १९६९ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १९७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१९७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १९७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १९७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १९७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १९७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १९८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १९८६ में राजीव–लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १९६२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १९६३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :–

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य–व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम–प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १९७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल

सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १९८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओम्वेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगड़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने–अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १९८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १९८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १९९९ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

९. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १९८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १९९७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधायक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओम्वेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन–रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक–एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथ पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली–११०००२

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर

14वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : 2 मार्च, 2021 (मंगलवार) से 14 मार्च, 2021 (रविवार)

(प्रतिदिन : प्रातः 8 से 11 बजे तथा सायं 3 से 6 बजे तक)

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

दिनांक : 13 व 14 मार्च, 2021 (शनिवार एवं रविवार)

स्वामी इन्द्रवेश

विस्तृत कार्यक्रम

दिनांक 13 मार्च, 2021

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ : प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक

नशामुक्ति सम्मेलन : प्रातः 10.30 बजे से 1 बजे तक

अध्यक्षता : स्वामी रामवेश जी महाराज, अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा

मुख्य अतिथि : श्री सुनील देशवाल, इंजीनियर, रोहतक

विशिष्ट अतिथि : श्री रणधीर सिंह रेढ़ू एडवोकेट, अध्यक्ष हरियाणा किसान यूनियन

संयोजक : प्रिं. आजाद सिंह, सोनीपत

मुख्य वक्ता : श्री इन्द्र सिंह आर्य, पूर्व एस.डी.एम., भिवानी

: प्रो. भूप सिंह आर्य, भिवानी

: श्री दयानन्द शास्त्री, टिटौली

भजन : बहन कल्याणी आर्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका

गौरक्षा एवं किसान सम्मेलन : मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक

अध्यक्षता : स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज

मुख्य अतिथि : श्री शमशेर आर्य, प्रधान, गौसेवा संघ, हरियाणा

विशिष्ट अतिथि : श्री अनिल कुमार हुड्डा (समाजसेवी), घुसकानी

: श्री रामचन्द्र ठेकेदार, टिटौली

संयोजक : श्री सोनू आर्य, सह-निदेशक मिशन आर्यावर्त न्यूज चैनल

मुख्य वक्ता : श्री जय प्रकाश आर्य सोहटी

: वानप्रस्थ शमशेर नम्बरदार लाडवा, हिसार

भजन : बहन कल्याणी आर्या

यज्ञ एवं संन्ध्या : सायं 5 से 6.30 बजे तक

पाखण्ड खण्डन सम्मेलन : रात्रि 7.30 से 10 बजे तक

अध्यक्षता : आचार्य हरिदत्त जी, गुरुकुल लाढ़ौत

मुख्य अतिथि : स्वामी ब्रह्मानन्द जी हाथरस, उ. प्र.

विशिष्ट अतिथि : स्वामी सोम्यानन्द जी, मथुरा, उ. प्र.

: श्री गंगाशरण आर्य, दिल्ली

संयोजक : ब्र. सहसरपाल आर्य, व्यायामाचार्य

भजन : बहन कल्याणी आर्या

दिनांक 14 मार्च, 2021

चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति : प्रातः 8 बजे से 10.30 बजे तक

आशीर्वाद एवं उपदेश : स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज (यज्ञ ब्रह्मा)

आर्य सम्मेलन : प्रातः 11 बजे से 3 बजे तक

अध्यक्षता : चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार

मुख्य अतिथि : पं. माया प्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सारस्वत अतिथि : प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विशिष्ट अतिथि : श्री विशाल मलिक, प्रसिद्ध समाजसेवी, पंचकूला

: वैद्य सत्य प्रकाश आर्य, कायाकल्प चिकित्सा केन्द्र

: श्री बजरंग लाल गोयल, कोषाध्यक्ष आर्य समाज, हिसार

स्वागताध्यक्ष : श्री महावीर सिंह ठेकेदार, टिटौली

संयोजक : ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान सार्व. आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

प्रमुख वक्ता : स्वामी यतीश्वरानन्द जी, विधायक, हरिद्वार

: स्वामी श्रद्धानन्द जी, सरस्वती, पलवल

: स्वामी नित्यानन्द जी, उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

: स्वामी विजयवेश जी, सोमधाम आश्रम खेड़ला, गुरुग्राम

: श्री बिरजानन्द जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

: डॉ. बलवीर जी आचार्य, पूर्व विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द वि. वि.

: श्री लाजपत राय जी चौधरी, संरक्षक, आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

: श्री अजीत सिंह जी पूर्व विधायक, झज्जर

: श्री हवा सिंह हुड्डा, युवा समाजसेवी

: ब्र. अग्निदेव आर्य जी, गुरुकुल कालवा, जीन्द

: श्री रामपाल शास्त्री जी, कार्यकारी प्रधान मानवसेवा प्रतिष्ठान

अभिनन्दनीय अतिथि

श्री राम निवास आर्य, श्री दलबीर सिंह आर्य, श्री सोमवीर कोच, श्री ओम सिंह कोच, कु. मुकेश आर्या, श्री सूरजमल छातर, श्री रामसिंह लोहचब, श्री रामपाल शास्त्री, प्रो. आनन्द सिंह, श्री शान्ति प्रकाश आर्य, श्री श्रवण कुमार आर्य, श्री बाबूलाल आर्य, श्री ऋषिपाल आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री हरिओम सरपंच, श्री इन्द्रजीत शर्मा, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, श्री अजय शास्त्री, श्री वेदपाल आर्य, श्री श्रीनिवास आर्य, श्री कर्मपाल आर्य, ब्र. रामफल आर्य, श्री इन्द्रपाल आर्य, श्री जगदीश सींवर, श्री अशोक वर्मा।

स्वागत समिति

श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री राम कुमार आर्य, डॉ. महावीर सिंह, श्री जिले सिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री जय भगवान, डॉ. धर्मवीर शास्त्री, डॉ. राज सिंह, श्री राम निवास, पं. विशम्भर शर्मा, श्री ध्रुव कुमार आर्य, पं. राम निवास शर्मा (खिडवाली), श्री जागेराम आर्य, मा. नफे सिंह, श्री धर्मवीर आर्य।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के प्रमुख यजमानों की सूची

श्री अरविन्द मेहता एवं श्रीमती मधुर भाषिणी, दीनानगर
श्री विद्या मित्र ठुकराल एवं श्रीमती कृष्णा ठुकराल, दिल्ली
श्री सुरेन्द्र गुप्ता एवं श्रीमती शालिनी गुप्ता, दिल्ली
डॉ. रणवीर सिंह खासा एवं श्रीमती सुनीता रोहतक
श्री महावीर सिंह ठेकेदार एवं श्रीमती कविता टिटौली
श्री जय सिंह ठेकेदार एवं श्रीमती गुलाब कौर, गोहाना
श्री आर. के. गुप्ता एवं श्रीमती कमलेश गुप्ता, दिल्ली
श्री बाबूलाल जिन्दल एवं श्रीमती गुणवती जिन्दल, दिल्ली
श्री जय कृष्ण जिन्दल एवं श्रीमती शारदा जिन्दल, दिल्ली
श्री लक्ष्मीनारायण जिन्दल एवं श्रीमती दमयन्ती जिन्दल दिल्ली
श्री हरिओम जिन्दल एवं श्रीमती अंजू जिन्दल, दिल्ली
श्री मनोज कुमार सिंह एवं श्रीमती अर्चना सिंह, दिल्ली
श्री नरेश धोंदियाल एवं श्रीमती ललिता, दिल्ली
श्रीमती अमित मान एवं श्रीमती ज्योत्सना मान, दिल्ली
श्री संदीप सिंह एडवोकेट एवं श्रीमती अनुसिंह, चण्डीगढ़
श्री विष्णुपाल एवं श्रीमती नन्दिता देवी, दिल्ली
प्रो. अजीत कुमार एवं श्रीमती कान्ता, दिल्ली
श्री मधुर प्रकाश एवं श्रीमती नीतेश, दिल्ली
श्री राजीव एवं श्रीमती उर्मिला आर्या, रोहिणी, दिल्ली
श्री अमित बल्हारा एवं श्रीमती रश्मि देवी, रोहतक
श्री वीरपाल देशवाल एवं श्रीमती उर्मिला, लाढ़ौत
डॉ. गजराज कौशिक एवं श्रीमती डॉ. नीलम, गोहाना
डॉ. विशिष्ट सिंह एवं श्रीमती रीतू रानी, रोहतक
श्री जगफूल सिंह ढिल्लो एवं श्रीमती शीला देवी, जीन्द
श्री चन्द्र प्रकाश मलिक एवं श्रीमती कौशल्या देवी, भिवानी
श्री ओम प्रकाश एवं श्रीमती सुदेश कुमारी, भिवानी
श्री राजेन्द्र शास्त्री एवं श्रीमती मधुबाला, पानीपत
श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री एवं श्रीमती कृष्णा, रोहतक
श्री दिलबाग सिंह अहलावत एवं श्रीमती उर्मिला, रोहतक
श्री धर्मेन्द्र आर्य एवं श्रीमती रीतू, छपरौली, उत्तर प्रदेश
श्री नरेन्द्र पहलवान एवं श्रीमती मोनिका देवी, छपरौली, उत्तर प्रदेश
श्री अवनीश आर्य एवं श्रीमती ऊषा देवी, रठौड़ा, उत्तर प्रदेश
श्री जगदीश चन्द्र एवं श्रीमती शशि बाला, रधाना, जीन्द
मा. अजीत पाल एवं श्रीमती कृष्णा, खटकड़, जीन्द
श्री सज्जन सिंह राठी एवं श्रीमती रेणु, जीन्द
श्री अशोक आर्य एवं श्रीमती रेखा, खटकड़, जीन्द
श्री वीरेन्द्र पहलवान एवं श्रीमती सुमन देवी, खटकड़, जीन्द
श्री जितेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सविता, गुमाना
मा. प्रदीप कुमार एवं श्रीमती प्रभावती, रोहतक
श्री विनीत सिंह एवं श्रीमती कविता, रोहतक
डॉ. परविन्द्र कुमार एवं श्रीमती सुमन, रोहतक
श्री शान्तनु आर्य एवं श्रीमती दीपिका, सोहटी
डॉ. एन.पी. गौड़ एवं श्रीमती मंजुला, बहल
श्री हरिकेश राविश एडवोकेट एवं श्रीमती चन्द्रसुखी, कैथल
श्री सत्यवीर आर्य एवं श्रीमती जगमती, कैथल
श्री अशोक वशिष्ठ एवं श्रीमती अमिता, दिल्ली
श्री श्यामलाल आर्य एवं श्रीमती मंजू बाला, कैथल
श्री अमित गुप्ता एवं श्रीमती मीना गुप्ता, कैथल
डॉ. विवेकानन्द शास्त्री एवं श्रीमती मनीषा भारती, रोहतक
डॉ. श्यामदेव एवं श्रीमती नन्दिता, रोहतक
आचार्य सत्यव्रत एवं श्रीमती सुमन, रोहतक
डॉ. यशदेव शास्त्री एवं श्रीमती सरिता, रोहतक
श्री विनोद हुड्डा एवं श्रीमती सोनिया, रोहतक
श्री ओम पहलवान एवं श्रीमती प्रीति देवी, अजायब, रोहतक
श्री वेद प्रकाश आर्य एवं श्रीमती विद्यावती, रोहतक
श्री धर्मदेव आर्य एवं श्रीमती सविता, रोहतक
श्री बबरूभान अहलावत एवं श्रीमती सुषमा, रोहतक
डॉ. स्वतन्त्रानन्द शास्त्री एवं श्रीमती राजबाला, रोहतक
श्री महावीर शास्त्री एवं श्रीमती सुनीता, रोहतक
श्री बलवीर शास्त्री एवं श्रीमती दर्शना, रोहतक
श्री मनोज पहलवान एवं श्रीमती रीतू, फरमाना
श्री राजेश आर्य एवं श्रीमती रजनी आर्या, फरमाना
श्री यज्ञवीर सिंह एवं श्रीमती प्रवेश, सुन्डाना
श्री विश्वबन्धु शास्त्री एवं श्रीमती विमला, आहूलाना
श्री राम कुमार आर्य एवं श्रीमती संतोष, आहूलाना
श्री पवन आर्य एवं श्रीमती कृष्णा, आहुलाना
श्री रामवीर आर्य एवं श्रीमती शिल्पा, सिवाना
श्री कृष्णदेव शास्त्री एवं श्रीमती पूजा, बोहर
श्री कर्मवीर आर्य एवं श्रीमती सुमित्रा, खरकड़ा
श्री बलवन्त सिंह आर्य एवं श्रीमती सुलोचना, लाढ़ौत
श्री यशवन्त देशवाल एवं श्रीमती उर्मिला, रोहतक
श्री रामावतार आर्य एवं श्रीमती नीलम देवी, लोहारू
श्री महेन्द्र सिह आर्य एवं श्रीमती भारती, आर्यनगर, हिसार
श्री आजाद सिंह पूनिया एवं श्रीमती सरोज कुमारी, सुरेहती
डॉ. शीशराम आर्य एवं श्रीमती प्रेम, महम
श्री सत्यपाल आर्य एवं श्रीमती सुषमा देवी, जूई, भिवानी
श्री ईश्वर दत्त एवं श्रीमती सुनीता शास्त्री, कैथल
श्री मनेन्द्र सिंह बांगड़ एवं श्रीमती मोनिका देवी, सोनीपत
श्री सुभाष आर्य एवं श्रीमती प्रियंका, बिजनौर
श्री अजय पाल एवं श्रीमती प्रीति, टिटौली
श्री सुभाष कुण्डू एवं श्रीमती अनीता, टिटौली
श्री कृष्ण प्रजापत एवं श्रीमती बाला, टिटौली
श्री नरेश पंडित एवं श्रीमती पिंकी, टिटौली
श्री सत्यप्रिय एवं श्रीमती रश्मि, टिटौली
श्री नरदेव आर्य एवं श्रीमती निर्मला, टिटौली
मा. रमेश एवं श्रीमती नीलम, टिटौली
श्री अमित आर्य एवं श्रीमती श्वाति, टिटौली
श्री तकदीर आर्य एवं श्रीमती नीलम देवी, टिटौली
श्री कृष्ण कुमार एवं श्रीमती सोनिका, टिटौली
श्री पाणिनी एवं श्रीमती शकुन्तला, टिटौली
श्री महा सिंह एवं श्रीमती सावित्री, टिटौली
डॉ. नारायण सिंह एवं श्रीमती अनीता, टिटौली
श्री वीरेन्द्र कुण्डू एवं श्रीमती कृष्णा, टिटौली
श्री अजय कुण्डू एवं श्रीमती रीतू, टिटौली
श्री धर्मदेव वशिष्ठ एवं श्रीमती रीना, टिटौली
श्री अनिल एवं श्रीमती शीला, टिटौली
श्री कश्मीर एवं श्रीमती सुशीला, टिटौली
श्री सत्यवीर सिंह एवं श्रीमती कृष्णा, टिटौली
श्री महेन्द्र सिंह एवं श्रीमती रामकौर, टिटौली
श्री राजेन्द्र सिंह एवं श्रीमती ओमवती, टिटौली
श्री राजवीर मलिक एवं श्रीमती प्रमिला, मोखरा
श्री संजय एवं श्रीमती निर्मल, मोखरा
श्री दीपक एवं श्रीमती प्रीति, मोखरा
श्री देवी सिंह आर्य एवं श्रीमती पूनम, रोहतक
श्री राज कुमार हुड्डा एवं श्रीमती सुमन हुड्डा, रोहतक
श्री जगवीर मलिक एवं श्रीमती किरण, रोहतक
श्री रणवीर राठी एवं श्रीमती उर्मिल राठी, रोहतक
श्री विनोद हुड्डा एवं श्रीमती अनीता, रोहतक
श्री जिले सिंह सैनी एवं श्रीमती बिमला, टिटौली
श्री सुभाष एवं श्रीमती निशा, जीन्दराण
श्री रामराज कादियान एवं श्रीमती सुमन, रोहतक
श्री धर्मपाल एवं श्रीमती सुनीता, रोहतक
श्री इन्द्रजीत राणा एवं श्रीमती नीरज, रोहतक
कर्नल श्री आर.के. सिंह एवं श्रीमती कृष्णा, रोहतक
श्री अर्जुन सिंह एवं श्रीमती शकुन्तला, रोहतक
श्री कंवर सिंह मलिक एवं श्रीमती सन्तोष, रोहतक
श्री सुखवीर शास्त्री एवं श्रीमती रेणू, रोहतक
श्री रविन्द्र कुमार एवं श्रीमती रेणू, काहनी
श्री अजय एवं श्रीमती प्रतिमा, रिठाल
श्री अजय एवं श्रीमती विनीता, रोहतक
ठेकेदार श्री भूप सिंह एवं श्रीमती ओमपति, रोहतक
श्री जगमाल सिंह नरवाल एवं श्रीमती सुषमा, रिठाल
श्री अशोक बल्हारा एवं श्रीमती राजबाला, रोहतक
श्री कुलदीप कादियान एवं श्रीमती कमला, रोहतक
श्री राम निवास आर्य एवं श्रीमती सुमन, मालवी, जीन्द
श्री ईश्वर सिंह एवं श्रीमती सुमित्रा, टिटौली
श्री देवेन्द्र एवं श्रीमती पूजा, टिटौली
श्री बलराम आर्य एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी, गंगाना

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
चन्द्रभान आर्य (अमेरिका)

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य
अजयपाल आर्य

बहन प्रवेश आर्या
सुनील देशवाल

बहन पूनम आर्या
बिरजानन्द

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 941663 0916, 93 54840454, 946643 0772, 01262–286900

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

हरिद्वार में कुम्भ मेले के अवसर पर वेद प्रचार शिविर का होगा भव्य आयोजन

एक बार फिर फहराई जायेगी पाखण्ड-खण्डिनी पताका

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधन में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हरिद्वार के सहयोग से वैदिक विरक्त मण्डल के सान्निध्य में वेद प्रचार शिविर का आयोजन हरिद्वार में किया जायेगा। इस अवसर आर्यजन अपनी सुविधा एवं व्यवस्था के अनुसार शिविर में पधारकर ज्ञान लाभ उठा सकते हैं। शिविर की आवास, भोजन एवं प्रचार की व्यवस्था के लिए आप अपना सहयोग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय में निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष :-011-23274771 ● ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

नारी उत्पीड़न एवं आर्य समाज

- आजाद सिंह बांगड़

विश्वभर में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जो मानव जीवन में महिलाओं के अस्तित्व, वर्चस्व और गरिमा को रेखांकित ही नहीं करता बल्कि स्वीकारता भी है लेकिन जिस प्रकार महिला दिवस को मनाया जाता है उसे रस्म अदायगी या औपचारिकता की खानापूर्ति से अधिक कुछ भी नहीं माना जा सकता। महिला दिवस पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिका महिलाओं के बारे में बहुत सारी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। जिसमें दर्शाया जाता है कि अमुक महिला ने ये पद या स्थान स्थिति प्राप्त की है। पीठ थपथपाने, प्रशंसा करने में इतने लग्नशील हो जाते हैं कि इन करोड़ों महिलाओं के बारे में भूल जाते हैं जो आज भी धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक मजबुरियों का शिकार होकर अपनी गरिमा को सरेआम लुटता देख कर खून के आंसु पी लेती हैं और किसी को खबर तक नहीं लगती। कुछ शीर्ष महिलाओं को अपवाद मानकर यदि समूचे महिला समाज पर दृष्टिपात करें तो परिणाम नकारात्मक ही सामने आयेगा, इस स्थिति में ये सारे दावे झूठे हो जाते हैं। जिसमें कहा जाता है कि महिलाओं को भी वो ही समानता, न्याय, स्वतन्त्रता प्राप्त है जो पुरुषों को प्राप्त है। इन दावों का विश्लेषण करके यदि महिला दिवस मनाया जाये तो सार्थक रहेगा।

यहां पर हमें समानता, न्याय और स्वतंत्रता के आधार पर ही चर्चा करनी चाहिए। यदि नारी को वास्तव में समानता का दर्जा प्राप्त है तो प्रश्न उठता है कि हर वर्ष लाखों कन्या भ्रूण हत्यायें इस देश में क्यों हो रही हैं? इस्लाम ने एक पुरुष को चार औरतें रखने की छूट क्यों दे रखी है? ईसाईयत आज भी नारी को बिना रूह व आत्मा का प्राणी क्यों मानते हैं?

शरियत में आज भी महिला की आधी गवाही क्यों माना जाता है? मंदिर, मजिस्द, गिरजाघर, मठों में पुजारी, इमाम, पादरी, महंत के पद पर पुरुषों का वर्चस्व सदियों से क्यों चला आ रहा है? बुरके व परदे महिलायें क्यों पहनती हैं? सती प्रथा का अत्याचार पुरुषों पर क्यों नहीं? पुरुष पर पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध क्यों नहीं? आधी आबादी का भाग होते हुए भी महिला पंचायत, विधानसभा, संसद में आधा भाग क्यों नहीं? सरकारी सेवाओं में भी आधा भाग क्यों नहीं? नारी को वेदमंत्रों के पठन-पाठन का अधिकार क्यों नहीं? नारी को नरक का द्वारा क्यों माना जाता है? उसे ताड़ना का ही पात्र क्यों माना गया? नारी को मर्द की खेती क्यों कहा गया? देवदासी प्रथ, दहेज प्रथा, कन्या बाल विवाह, बलातकार, यौन उत्पीड़न, तलाक पुरुष निरंकुशता, सम्पत्ति में भागीदारी न होना ये सब महिलाओं के खाते में क्यों है? जिस समाज में नारी पुरुष पर आश्रित हो और उसकी पहचान पुरुष गोत्र से हो तो उस समाज में समानता का अर्थ कितना रह जाता है?

कानून की दृष्टि में नर-नारी समान हैं लेकिन न्यायाधीश और अदालत को विधि संहिताओं के अन्तर्गत ही फैसला लेना होता है और विधि संहिताओं के निर्माता पुरुष रहे हैं महिलाएं नहीं। इसलिए विधि संहिताएं महिलाओं के बारे में पूरी तरह खुद प्राकृतिक न्याय पर आधारित नहीं है। पाकिस्तान में महिला कैदियों में से 80 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो अपने ऊपर हुए बलातकार को सिद्ध न कर पाने के कारण जेल में बंद है। क्योंकि वहां के कानून में ऐसी ही व्यवस्था है। स्वाधीन भारत में भी महिलाओं को न्याय व सुरक्षा दिलाने के लिए 25-30 बार नये कानून व अधिनियम बनाने पड़े जिससे मालूम होता है कि कानून व्यवस्था में कुछ कमी थी।

अर्थ शास्त्री अमर्त्य सेन की पुस्तक आर्गुमेंटेटिव इंडियन के आधार पर उत्तरजीविता की समानता, घरेलू लाभ या कार्बो में असमान हिस्सा, घरेलू हिंसा या अत्याचार के भेद मानते हुए नारी पर उत्पीड़न हो रहा है। इन्हें आधार मानते हुए आकलन किया जाता है कि कानून को साक्षी आधारित होने की परिस्थिति की बजाय अन्य सम्भावना पर आधारित बनाना होगा। न्यूनताएं और अक्षमताओं के कारण न्यायी प्रणाली द्वारा पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। जब पुलिस, गवाह, वकील और अदालत तक की आंखे धन से चौंधिया जाती हैं तो कानून को वे अपने सुराख बंद करने होंगे, जिनमें से अपराधी बच कर निकल भागता है। ऐसी स्थिति आने पर महिला को न्याय मिल सकता है।

परमपरावादी या रूढ़िवादी समाजों में आज भी नारी दूसरे दर्जे की हैसियत प्राप्त है। युगल प्रेमियों के मामले में पंचायते खापें जो आज निर्णय ले रही हैं उससे यह बात निकल कर आ रही है कि लड़कियों को आजादी देने से पथ भ्रष्ट होने की सम्भावना बलवती होती है। टी.वी., अश्लील पुस्तकें जो वातावरण तैयार कर रही हैं उससे सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक यश और चारित्रिक गरिमा पर आघात करने वाली कोई भी घटना इस परम्परागत समाज में घुट जाती है तो एक तूान खड़ा हो जाता है और औरतों के लिए स्वतंत्रता का दायरा सीमित हो जाता है। विशेषकर यदि ऐसा घटना में दोनों एक ही जाति के ना होकर अलग-अलग जाति या सम्प्रदाय के हो तो तब स्थिति और अधिक बिगड़ जाती है।

गांव में आज भी यही परम्परा है कि गोत्र या गांव की लड़की पूरे गांव की बेटी मानी जाती है। इस तथ्य को शहर या दफ्तर में बैठने वाले अधिकतर लोग नहीं समझ सकते, न पचा सकते हैं। इनकी दृष्टि में बालिग लड़का या लड़की किसी भी जाति, धर्म से सम्बन्धित हो कानून के अनुसार एक दूसरे के साथ विवाह कर सकते हैं। माता-पिता की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। वे पूरी तरह स्वतन्त्र है, दूसरे पक्ष का कहना है कि यह कानून न तो हमारी सलाह से बनाया गया और ना ही हमारी परम्पराओं व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इसलिए हम मानने को बाध्य नहीं हैं। ऐसे मामलों में युगल को आजीवन अपने गांव, माता-पिता से अलग रहना पड़ता है। कई बार अपने जीवन से भी हाथ थोना पड़ता है। आर्य समाज अन्तरजातीय विवाह का समर्थन करता है मगर आर्य समाज भी पूर्ण रूप से इसे नहीं अपना पाया। भारतीय समाज विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों का देश है लेकिन साझे प्रयासों और साझी सोच से जब समग्र समाज के कल्याण की बात चलेगी तो देर-सवेर ऐसा समाधान अवश्य निकल जायेगा जो अधिकांश को मान्य होगा। यदि नई सम्भावनाओं और नई परिस्थितियाँ पैदा की जाये तो ऐसे समाधानों का क्रियान्वयन सहज एवं सरल होगा।

आर्य समाज उस समृद्ध संस्कृति का समर्थक है जिसमें भारतीय नारी की समानता, न्याय, स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे। जिसे आधुनिक नारी प्राप्त करना चाहती है। यह तभी सम्भव है जब समाज में वेदों की आचार संहिता का भी पालन होगा। जिस वातावरण में ये अधिकार उपयोगी होंगे, वह वातावरण तैयार नहीं हा रहा। नारी की शिक्षा, संस्कार, चरित्र और रोजगार की जब तक समुचित गारण्टी नहीं मिलती तब तक इन अधिकारों की संदिग्धता और दुरुपयोग की सम्भावना बनी रहेगी।

& jk"Vh; e=h] lkonf'kd vk; ;od
ifj"kn] ikpk; nu ofj"B ek/;fed fo|ky;

6 मार्च जन्म दिवस पर विशेष

क्रांति के अग्रदूत – स्वामी भीष्म

– डॉ. शिव कुमार शास्त्री

विचार–विचक्षण पाठकवृन्द आज से लगभग 160 वर्ष पूर्व चैत्र कृष्ण पंचमी सम्वत् 1915 रविवार सन् 1859 के दिन तेवड़ा (कुरुक्षेत्र) हरियाणा नामक छोटे से गांव में लाल सिंह नामक बालक का जन्म हुआ, वही आगे चलकर स्वामी भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनकी माता पार्वती देवी धार्मिक विचारों की आदर्श महिला थी। माता ने अपने पुत्र में वैदिक संस्कारों का बीज बोया। वह लाल सिंह को महर्षि दयानन्द की तरह ह्ष्ट–पुष्ट और बलवान बनाना चाहती थीं। अतः प्रारम्भ से ही उन्होंने वैदिक संस्कृति की शिक्षा दी। लाल सिंह के पिता रुढ़िवादी कट्टर पौराणिक थे परन्तु माता ने इस प्रभाव को पूर्णतया समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरूप वैदिक धर्म को एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। 'माता निर्माता भवति' बाल सुलभ चेष्टाओं के अतिरिक्त लाल सिंह में गाने की एक विशेष कला थी। वे 11 वर्ष की आयु से ही भजन गाने लग गये थे। सन् 1878 में क्रांतिकारियों से प्रभावित होकर सेना में भर्ती हो गये। पौने दो वर्ष तक सैनिक गतिविधियों में सम्मिलित रहने के पश्चात् बन्दूक लेकर फरार हो गये और क्रांतिकारी रूप धारण कर लिया।

वैराग्य की तीव्रता के कारण उस समय के एक विरक्त संन्यासी योगराज जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हो गये। योग साधना के साथ–साथ वेदान्त दर्शन का अध्ययन करना भी प्रारम्भ कर दिया। परन्तु इन्हें मानसिक शांति प्राप्त नहीं हुई। सन् 1886 में स्वामी भीष्म जी को देव दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश के गहन अध्ययन ने स्वामी भीष्म की दिशा बदल दी। उन्होंने समाज सुधार और परतन्त्र देश को स्वतंत्र कराने का दृढ़ संकल्प कर लिया। परिणामस्वरूप गांव–गांव जाकर लोगों को रुढ़िवाद से निकालकर वैदिक धर्म की दीक्षा देने लगे। सन् 1920 से 1934 तक स्वामी जी करहैड़ा (गाजियाबाद, उ. प्र.) नामक गांव के पास जंगल में कुटिया बनाकर रहे। यहाँ पर उस समय के प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ, लाल बहादुर शास्त्री, चौ. चरण सिंह आदि यदा–कदा स्वामी जी से मिलकर देश की स्वतंत्रता के लिए भावी योजनाएँ बनाते रहे। यह छोटा सा गांव क्रांतिकारियों की गतिविधियों का एक प्रसिद्ध केन्द्र बन गया। सन् 1936 में स्वामी भीष्म जी ने घरौण्डा, करनाल हरियाणा नामक कस्बे में भीष्म भवन नाम का एक मकान बनवाकर अंग्रेज अधिकारियों के विरोध के बावजूद उस पर राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) फहरा दिया। सन् 1937 में अपने श्रद्धालु चौ. चरण सिंह का विधानसभा चुनाव में हाथी पर बैठकर पूरे क्षेत्र में प्रचार किया। वही चौ. चरण सिंह स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और कालान्तर में भारत के प्रधानमंत्री बने। सन् 1938 में आजादी के दिवाने सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में दिल्ली में जो भारतीय नौ–जवान सम्मेलन हुआ उसमें स्वामी भीष्म के "जवानी सफल हो सेना के तैयार से" जो क्रांतिकारी भजन सुना उसके परिणामस्वरूप सुभाष चन्द्र बोस ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज का गठन किया था। स्वामी भीष्म ने उत्तरी भारत में विशेषकर ग्रामीण अंचल में घूम–घूमकर क्रांति का बिगुल बजाया जिससे जन–साधारण में राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। लोगों ने भारत देश की परतंत्रता की श्रृंखलाओं को छिन्न–भिन्न करने का संकल्प लिया और 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया। अंग्रेजी राज में निराश, हताश जनता को आशान्वित करने के लिए स्वामी जी एक गीत गाया करते थे।

vth, thn'ke vki djnseuknhA
ns[kks ns'k dks njokts ij vk igqph vktknhAA

सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध के दौरान स्वामी जी का यह गीत सबकी जुबां पर था –

pyks cth vkt j.kHkjh] er djks tokuks
njhA
ns'keu us ?kkfV;ka ?ksjh] Hkk;kdj tx gkxk D;k cBAA

स्वामी जी ने जहाँ अनेक भजनोपदेशक तैयार किये, भजनों की अनेक पुस्तकें लिखी वहाँ आर्य समाज एवं देश को एक ऐसा क्रांतिकारी व्यक्तित्व दिया जिसने पूरे देश में क्रांति का बिगुल बजा दिया। संसद की दिशा बदल दी। उस क्रांतिकारी व्यक्तित्व का नाम है स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती।

जब स्वामी भीष्म जी 121 वर्ष के हुए तो हरियाणा सरकार ने 21 मई, 1981 को कुरुक्षेत्र, हरियाणा में उनका नागरिक अभिनन्दन किया। इस अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह, चौ. दलबीर सिंह, श्री रामचन्द्र विकल, श्रीमती कुमुदवेन जोशी, हरियाणा एवं उड़ीसा के राज्यपाल, प्रसिद्ध पत्रकार अमर शहीद लाला जगत नारायण, सरदार भगत सिंह के अनुज सरदार कुलतार सिंह, हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ. भजन लाल अपने पूरे मंत्रिमंडल एवं विधायकों के साथ वहाँ उपस्थित थे। अनेक आर्य नेताओं, भजनोपदेशकों एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति उस भव्य समारोह को चार चांद लगा रही थी।

8 जनवरी, 1984 रविवार के दिन 125 वर्ष की अवस्था में इस महान् विभूति का सुखद निधन हुआ। यद्यपि आज स्वामी भीष्म जी का नश्वर शरीर हमारे साथ नहीं है। परन्तु उनकी यशः पताका वर्षों तक फहराती रहेगी। स्वामी भीष्म जी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व से प्रेरित होकर हमारे सुहृद् दानवीर एवं सरस्वती के वरद पुत्र ठा. विक्रम सिंह जी ने उनके अनेक भजनों को संग्रहीत कर 'क्रांति गीत' नामक पुस्तक को छपवाया है जो आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करती रहेंगी। मैं अपने दादा गुरु स्वामी भीष्म जी को उनके जन्मदिन (6 मार्च, 2018) पर स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मो.:– 9810095061

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम ने तीसरे महीने का राशन वितरण किया

यज्ञीय भावना से प्रेरित व्यक्तित्व ही मानव धर्म निभाता है

– ओम प्रकाश आर्य

28 फरवरी, 2021, अमृतसर। आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर में श्री ओम प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में महीने के आखिरी रविवार को विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। राशन वितरण से पूर्व आचार्य दयानन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में हवन–यज्ञ किया गया। यजमान श्री चमनलाल व श्री अश्विनी अग्रवाल ने यज्ञाग्नि में आहुतियाँ समर्पित कर सबके भले की कामना की। श्री शास्त्री जी ने भजन के माध्यम से सबको संदेश दिया कि –

"खाने से पहले अगर तुम हक पराया सोच लो,
कितने भूखों की है इनमें रोटियाँ देखा करो।
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ देखा करो।।"

इस अवसर पर सुलोचना आर्या, राकेश आर्या ने भी प्रभु भक्ति के भजनों को गाकर उपस्थित जन समूह को निहाल किया।

जरूरतमन्दों को हर महीने सहायता करने वाले मुख्य अतिथि श्री विजय सर्राफ प्रधान गोल्ड एण्ड सिलवर एसोसिएशन, श्री जुगल महाजन महामंत्री ऑल इण्डिया एन्टीक्रप्शन मोर्चा, श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, प्रिं. रजनी शर्मा, कृष्ण कन्या स्कूल आदि विशेष तौर पर उपस्थित हुए।

श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उपस्थित जन समूह को अपने सम्बोधन में कहा कि गरीबी और अमीरी व्यक्ति के अपने–अपने कर्मों का फल है। आत्मा सबकी एक जैसी है। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह सबके साथ अपनी आत्मा को अच्छा लगने वाले व्यवहार को करे। यज्ञीय भावना से प्रेरित व्यक्तित्व ही मानव धर्म निभाता है। इसी मानवता रूपी धर्म को सार्थक करने के लिए आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम हर महीने जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित कर सहायता कर रहा है। इस महीने भी 30 परिवारों को राशन दिया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री राज कुमार, अर्जुन कुमार, अशोक वर्मा, कमलेश रानी, नरेश पसाहन, नीलम, हिमांशु, निधि मदान, अंकित, साईना मदान, स. गुरशरन सिंह, दीपक महाजन, राजीव स्याल, प्रवीण पसाहन, गौरव, श्वेता, पंकज वर्मा, कोमल आदि ने पूर्ण सहयोग किया।

– दयानन्द शास्त्री

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के भांजे
श्री तरुण त्यागी का असमय दुःखद निधन

क्या गजब हो जजवाये दिल, गर यह अनजाम हो जाये।
मुसाफिर हो राहे मंजिल और शाम हो जाये।।

यह पंक्तियाँ सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष, वैदिक विद्वान् पं. माया प्रकाश त्यागी जी के भांजे होनहार नवयुवक श्री तरुण त्यागी सुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह त्यागी के साथ सीधे जुड़ती हैं। उनका दिनांक 21 फरवरी, 2021 को कार दुर्घटना में दुःखद निधन हो गया। वे 35 वर्ष के थे। 35 वर्ष की आयु में किसी होनहार युवक का निधन होना निश्चय ही अत्यन्त दुखद एवं हृदय विदारक घटना है। श्री तरुण त्यागी जी अपने सुन्दर स्वप्न हृदय में संजोये हुए सदा–सदा के लिए हमसे बिछुड़ गये। स्वप्नों की मंजिल पर पहुँचने से पहले ही उनके जीवन की शाम हो गई और मौत के क्रूर हाथों में उन्हें हमसे जबरन छीन लिया। इस दुःखद घटना से न केवल त्यागी परिवार बल्कि हम सभी लोग अत्यन्त आहत हैं।

श्री तरुण त्यागी जी अपनी कार से कल्पतरू आश्रम, मुरादनगर में किसी कार्य से जा रहे थे। आश्रम का रास्ता गंग नहर की पटरी पर बनी सड़क से होकर जाता है। जब उनकी गाड़ी गंग नहर की पटरी वाली सड़क पर चढ़ी तो कार का संतुलन बिगड़ जाने से सीधे नहर में जाकर गिरी। कार को नहर में गिरते हुए देखने वालों ने तुरन्त पुलिस को सूचना दी और कुछ व्यक्तियों ने नहर में कूद कर तरुण जी को बचाने की कोशिश भी की। पुलिस ने क्रेन द्वारा तरुण जी को कार सहित नहर से बाहर निकाला और मुरादनगर स्थित अस्पताल में उन्हें उपचारार्थ दाखिल करा दिया, किन्तु उपचार के दौरान ही उनका निधन हो गया। सम्भवतः नियति को यही स्वीकार था, क्योंकि सब प्रयत्न करने के बावजूद भी

तरुण जी को बचाया नहीं जा सका। श्री तरुण त्यागी अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता त्यागी तथा एक सुपुत्र अंकित तथा सुपुत्री रिधि को छोड़ गये हैं। श्री तरुण त्यागी अपनी माता श्रीमती संतोष त्यागी, दो भाईयों श्री सचिन त्यागी एवं श्री नितिन त्यागी, एक विवाहित बहन श्रीमती शालू त्यागी से भरे पूरे परिवार में सबसे छोटे थे। अत्यन्त होनहार, विनम्र तथा आकर्षक व्यक्तित्व के धनी श्री तरुण त्यागी के असमय चले जाने से त्यागी परिवार पर जो वज्रपात हुआ है वह अकल्पनीय है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी स्वयं श्री तरुण त्यागी के निधन पर शोक प्रकट करने तथा शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए 26 फरवरी, 2021 को राजनगर एक्सटेंशन उनके निवास पर पहुँचे उनके साथ पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका बहन अंजलि आर्या व श्री कृष्णपाल आर्य निवासी अटौर, नंगला भी उपस्थित थे। स्वामी आर्यवेश जी ने तरुण त्यागी जी के पिता श्री राजेन्द्र सिंह त्यागी जी, माता बहन संतोष त्यागी जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता त्यागी से मिलकर उन्हें सांत्वना प्रदान की। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि परिवार में छोटे तथा होनहार पुत्र का अकस्मात चले जाना त्यागी परिवार के लिए किसी वज्राघात से कम नहीं है। यह अनहोनी घटना त्यागी परिवार एवं आर्य समाज रूपी बृहद परिवार के लिए गहरा आघात है, लेकिन ईश्वर की व्यवस्था के सामने हम सब विवश हो जाते हैं। स्वामी जी ने श्री तरुण त्यागी जी की आत्मा की सद्गति तथा शो सन्तप्त परिवार को यह असहनीय कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा समाजसेवी
महाशय श्रीपाल आर्य जी नहीं रहे

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा अमर उजाला वाराणसी के सम्पादक श्री वीरेन्द्र आर्य जी के पिता महाशय श्रीपाल आर्य जी का 3 मार्च, 2021 को सायंकाल 4.30 बजे निधन हो गया है वे 86 वर्ष के थे। बागपत जिले के खेड़ा हटाना गाँव निवासी महाशय श्रीपाल आर्य पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे तथा जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में उपचाराधीन दाखिल थे। श्रीपाल आर्य जी अपने पीछे चार पुत्रों सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके बड़े सुपुत्र श्री देवेन्द्र आर्य अधिवक्ता हैं तथा श्री वीरेन्द्र आर्य अमर उजाला वाराणसी के सम्पादक के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आदरणीय महाशय श्रीपाल जी आर्य समाज के प्रसिद्ध आर्योपदेशक एवं भजनोपदेशक थे। उन्होंने हिन्दी रक्षा एवं गोरक्षा आन्दोलन तथा प्रसिद्ध किसान नेता चौ. महेन्द्र सिंह टिकैत के साथ किसान आन्दोलनों में भाग लिया और कई बार जेल यातनाएं भी भोगी। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का

प्रचार–प्रसार रहा। वह आर्य समाज के उच्चकोटि के आर्योपदेशक एवं भजनोपदेशक रहे और स्वयं द्वारा रचित रचनाओं के माध्यम से आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुरूप करते थे। उन्होंने अपनी रचनाओं को संग्रहीत करके अनेक पुस्तकों के रूप में भी प्रकाशित कराया, उन्हें अनेक बार आर्य समाज के कार्यक्रमों के अवसर पर उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कृत भी किया गया। ऐसे समाजसेवी महानुभाव का हम सबके बीच से अचानक चले जाना आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आदरणीय महाशय श्रीपाल आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें आर्य समाज का दृढ़ स्तम्भ बताया उन्होंने कहा कि महाशय जी के निधन से भजनोपदेशकों की श्रृंखला में एक स्थान और रिक्त हो गया है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा सभी पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।